केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान, (कें रेअ व प्र सं), मैसूरु
अनुसंधान सलाहकार समिति की 42वीं बैठक के कार्यवृत्त
दि. 27 व 28 नवंबर 2017

संस्थान तथा इसके संबंद्ध एककों के अनुसंधान व विस्तार कार्यकलापों की प्रगति की समीक्षा करने **(**अप्रैल **2017** से अक्तूबर **2017** तक**)** तथा नए परियोजना प्रस्तावों को विचारार्थ प्रस्तुत करने हेतु केंरेअप्रसं**,** मैसूर की अनुसंधान सलाहकार समिति की **42**वीं बैठक दि**. 27** व **28** नवंबर **2017** को संपन्न हुई । आचार्य एस**.**आर**.** निरंजना**,** उप कुलपति**,** गुलबर्गा विश्वविद्यालय व नई गठित असस के अध्यक्ष ने बैठक की अध्यक्षता की बैठक में उपस्थित सदस्यों एवं प्रतिभागियों की सूची **अनुबंध I** में संलग्न है।

बैठक प्रारंभ होने के पहले समिति के अध्यक्ष और सदस्यों ने प्रयोगशालाओं तथा शहतूत बागानों का वीक्षण किया । संस्थान के विभिन्न प्रयोगशालाओं तथा संस्थान में उपलब्ध सुविधाओं से समिति को अवगत किया गया।

डॉ वी. शिवप्रसाद, निदेशक ने केंरेबो और केंरेअप्रसं, मैसूरु की तरफ से नई गठित असस के अध्यक्ष और सदस्यों को पुष्पगुच्छ से स्वागत किया और केंरेअप्रसं, मैसूरु तथा संबंद्ध एककों के वैज्ञानिकों को बठक में स्वागत किया।

आचार्य निरंजना, अध्यक्ष, असस ने अपने अध्यक्ष भाषण में असस के अध्यक्ष के रूप में उन्हें चयन करने हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया और कहा कि पिछले 25-26 वर्षों में मैसूरु विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के रूप में कार्य करते समय वनस्पति विज्ञान / जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में केंरेअप्रसं, मैसूरु के वैज्ञानिकों से मिलजुलकर काम करने का अवसर मिला । यह भी सूचित किया कि उन्होंने निदेशक के साथ केंरेबो, बेंगलूरु में असस की बैठक में भाग लिया । भविष्य में, नई परियोजनाओं पर कार्य करते समय केंरेबो द्वारा त्री टयर सिस्टम यथा अनुसंधान परिषद, अनुसंधान सलाहकार समिति और अनुसंधान समन्वयन समिति, को अपनाया जाना है और अनुसंधान सलाहकार समिति को अनुसंधान समन्वयन समिति द्वारा अनुमोदित प्रणाली के अनुरूप कार्य करना है । उन्होंने यह भी कहा कि अनुसंधान परियोजनाएँ अनुप्रयोग उन्मुख होनी चाहिए । तथापि रेशमकीट और शहतूत की बुनियादी प्रक्रियाओं को समझने हेतु आण्विकी सिद्धांतों पर कार्य करना अपेक्षित है। उन्होंने वैज्ञानिकों को सलाह दी है कि रेशम उत्पादन पर प्रतिष्ठित पत्रिकाओं का पता लगाकर अनुसंधान शोध पत्रों को उसमें प्रकाशित किया जाए।

अ.स.स. अध्यक्ष ने यह भी सूचित किया कि अनुसंधान समन्वयन समिति के अनुसार वैज्ञानिकों को बाहर से निधि प्राप्त होने वाली परियोजनाओं को प्रतिपादित करना है जो केंरेअप्रसं, मैसूर में प्रयोगशालाओं को सुधारने हेतु अपेक्षित है । उन्होंने कृषकों के लिए लाभप्रद प्रौद्योगिकियाँ / उत्पाद विकसित करने तथा वाणिज्यीकरण और एकस्वकरण हेतु किए केंरेअप्रसं, मैसूरु के प्रयासों की सराहना की।

बाद में सभी प्रतिभागियों ने असस के अध्यक्ष एवं सदस्यों को अपना परिचय दिया।

अ स स की दि. 20 व 21 अप्रैल 2017 को संपन्न बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि

अ स स पिछली बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि की जैसाकि किसी भी सदस्य से कोई टिप्पणी प्राप्त नहीं हुई।

असस की 41 वीं बैठक में लिए गए निर्णयों पर कृत कार्रवाई की समीक्षा

डॉ वी. शिवप्रसाद, निदेशक ने पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर कृत कार्रवाई संबंधी रिपोर्ट प्रस्तुत की। समिति ने निर्णयों पर की गई अनुवर्ती कार्रवाई एवं पिछली असस के सुझावों पर संतुष्टि जताई। समिति ने निम्नलिखित सुझाव दिए

- कताई नहीं करने वाले लार्वो प्रकोप पर क्षेत्र स्तर पर अध्ययन के संबंध में समिति ने सुझाया कि कताई करने वाले लार्वों में वयांत्र (स्पिनरेट) की स्थिति पर ई.एम. अध्ययन किया जाए।

(कार्रवाई : रेरोवि, केंरेअप्रसं, मैसूरु)

- उष्ण एवं शुष्क और उष्ण एवं आर्द्र क्षेत्रों के लिए आदर्श रेशमकीट पालन गृह विकसित करने के संबंध में सुझाया गया कि सभी जलवायु स्थिति के लिए उपयुक्त या जलवायु स्थिति के अनुसार परिवर्तनीय रेशमकीटपालन गृह निर्मित करें।

(कार्रवाई : रेअप्र, केंरेअप्रसं, मैसूरु)

- रेशम उत्पादन उपस्करों को किराए पर देने वाले केन्द्रों को विकसित करने के संबंध में समिति ने सुझाया कि कृ.वि.कें. (के.वी.के.) के समन्वयन से काम करें जो कृषि उपस्करों / मशीनों के लिए समान प्रणाली कार्यान्वित की जा रही है।

(कार्रवाई : रे.वि.प्र., केंरेअप्रसं, मैसूरु)

अनुसंधान प्रगति के मुख्यांश

डॉ वी. शिवप्रसाद ने रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान संस्थान तथा संबंद्ध एककों द्वारा शहतूत एवं रेशमकीट उत्पादन, संरक्षण, विस्तारण एवं प्रशिक्षण जैसे अनुसंधान क्षेत्रों पर हुई प्रगति पर रिपोर्ट प्रस्तुत की। अध्यक्ष एवं सदस्यों ने केंरेअप्रसं, मैसूरु के अनुसंधान एवं विकास उपलब्धियों पर वैज्ञानिकों एवं निदेशक के सामूहिक प्रयासों की सराहना की।

समाप्त परियोजना की समीक्षा

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान एक अनुसंधान परियोजना समाप्त हुई और समिति द्वारा इसकी समीक्षा की गई।

ए.आर.पी – 3597 : रेशमकीट में नोसेमा बोम्बिसिस का पता लगाने हेतु लैम्प (लूप पोषण पदार्थ समतापीय प्रवर्धन) का मानकीकरण एवं मान्यकरण।

समिति ने पेब्रिन का पता लगाने हेतु लैंप टेकनीक के निष्पादन की समीक्षा की और एरी, मूगा एवं तसर रेशमकीटों में प्रौद्योगिकी की जाँच करने का सुझाव दिया ।आगे अ.स.स. ने प्रौद्योगिकी स्थानांतरण परियोजना के रूप में लैप टेकनीक पर व्यापक क्षेत्र परीक्षण करने का सुझाव दिया गया।

(कार्रवाई : रे.रो.वि., केंरेअप्रसं, मैसूरु)

अनुमोदनार्थ नए अनुसंधान परियोजना प्रस्ताव

समिति ने संबंधित वैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तुत निम्नलिखित नए परियोजना प्रस्तावों को प्रस्ताव की अद्वितीयता, अनुसंधान पहलू एवं शहतूत रेशम उत्पादन में इसकी सुसंगता के आधार पर समालोचनात्मक समीक्षा की।

1. **विभिन्न जल वायु स्थितियों के अधीन उपज एवं अनुकूलनशीलता हेतु श्रेष्ठ त्रिगुणित जीन प्ररूपों का मूल्यांकन**

डॉ टी. मोगिलि, वैज्ञानिक डी प्रधान अन्वेषक ने निर्णायकों की टिप्पणी सहित परियोजना प्रस्ताव प्रस्तुत की । (निर्णायकों ने परियोजना कार्यान्वित करने की सिफारिश की) समिति ने प्रस्ताव की समालोचना करके परियोजना के लिए अनुमोदन दिया जैसाकि यह पहले समाप्त परियोजना की अनुवर्ती कार्रवाई है जिसके लिए निम्नलिखित आशोधन / सुझाव दिए गए है।

- चयनित उपजाति के मूल्यांकन को उद्देश्य के रूप में शामिल किया जाए।
- मूल्यांकन के दौरान पीडक एवं रोग प्रकोप दर्ज करे और पादप रोग विज्ञानी और कीट विज्ञानी को सम्मिलित करा लें।
- उपज एवं अन्य सहायक घटकों के साथ मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैव घटकों को समय समय पर दर्ज करें।
- रोपण सामग्री में मूल विगलन एवं मूल गांठ रोग की जाँच करना परीक्षण का अनिवार्य अंग है।
- अनुकूलतम स्थितियों में युग्म पंक्ति रोपण और उप अनुकूलतम स्थितियों में वृक्ष कृषि प्रणाली अपनाने का सुझाव दिया गया है।

(कार्रवाई : डॉ टी. मोगिलि, वैज्ञानिक डी, श.प्र., केंरेअप्रसं, मैसूरु)

2. उप अनुकूलतम सिंचित स्थितियों में सूखा अनुकूल विशेषकों का उपयोग करते हुए विकसित संततियों से उन्नत उपज और अनुकूलनशीलता वाले श्रेष्ठ संकरों को पहचानने हेतु प्राथमिक उपज मूल्यांकन।

डॉ तनमय सरकार, वैज्ञानिक बी व प.अ. ने निर्णायकों की टिप्पणी सहित (निर्णायकों ने परियोजना कार्यान्वित करने की सिफारिश की) परियोजना प्रस्ताव प्रस्तुत किया। समिति ने परियोजना प्रस्ताव के लिए अनुमोदन दिया। परियोजना जलवायु परिवर्तन के अनुरूप सूखा प्रतिरोधी उपजाति विकसित करने की दृष्टि से समय की माँग है और समाप्त परियोजना का अनुवर्ती कार्य है जिसके लिए निम्नलिखित सुझाव दिए गए है।

- शहतूत जीन प्ररूपों को वर्गीकृत करने तथा चयन करने हेतु उपलब्ध आण्विकी चिह्नकों का उपयोग करें।
- आशोधित कार्य योजना कार्यान्वित करने हेतु बजट संशोधित करें।

(कार्रवाई डॉ तनमय सरकार, वैज्ञानिक बी, शप्रअ, केंरेअप्रसं, मैसूरु)

3. विदेशी एवं वन्य जनन द्रव्य का उपयोग करते हुए उच्च उत्पादक और व्यापक तौर पर अपनाए जा रहे शहतूत का विकास

डॉ वैजयंती, वैज्ञानिक बी व प.अ. ने परियोजना प्रस्ताव प्रस्तुत किया और परियोजना पर निर्णायकों की टिप्पणी पर चर्चा की जिसमें उच्च उत्पादक एवं व्यापक तौर पर अपनाई जा रही शहतूत उपजाति विकसित करने हेतु नया प्रजनन कार्यक्रम सम्मिलित है। निम्नलिखित सुझाव दिया गया है।

- चालू प्रस्ताव को 5 साल संकरण स्तर तक सीमित रखें जिसे प्राथमिक उपज परीक्षण के रूप में जारी रखा जा सके।

(कार्रवाई डॉ वैजयंती, वैज्ञानिक बी, उ.जी.वि. केंरेअप्रसं, मैसूरु)

4. देशी और विदेशी द्विप्रज नस्लों का उपयोग करते हुए उन्नत रेशम गुणवत्ता वाले बहुप्रज नस्लों को विकसित करना।

डॉ के.बी. चंद्रशेखर, वैज्ञानिक डी व प.अ. ने प्रजनकों की बैठक में की गई सिफारिशों के आधार पर परियोजना प्रस्ताव प्रस्तुत किया और परियोजना के संबंध में निर्णायकों की टिप्पणी भी सामने रखी समिति ने परियोजना की समालोचना की और परियोजना के लिए अनुमोदन दिया, जिसका उद्देश्य 3ए से उच्च श्रेणी का रेशम उत्पादित करना है, जो समय की माँग है जैसाकि भारतीय रेशम उत्पादन का 80% संकर नस्ल पर केंद्रित है। परियोजना के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए गए।

- कई पीढियों से विकसित वंश का बीजागार निष्पादन, फ्लोस प्रतिशत और कोसा कवच की सधनता में एकरूपता और रेशम गुणवत्ता प्राचलन सम्मिलित करें।

(कार्रवाई: डॉ के बी चंद्रशेखर, वैज्ञानिक डी शप्रप, केंरेअप्रसं, मैसूरु)

5. उद्योग द्वारा प्रायोजित परियोजना : रेशम उत्पादन में प्रभावी विसंक्रमण हेतु फिनोलिक यौगिक

डॉ मेरी जोसेफा, वैज्ञानिक डी व प.अ. ने उद्योग उन्मुख अनुसंधान प्रस्ताव प्रस्तुत किया है और समिति ने परियोजना पर चर्चा करके प्रस्ताव के लिए अनुमोदन दिया जैसा कि प्रायोजक उद्योग द्वारा पूरी लागत दी जा रही है , जो रेशम उत्पादन उद्योग और कृषकों के लिए उपयोगप्रद है। निम्नलिखित सुझाव दिए गए है।

- लागत प्रभाव एवं उपभोक्ता अनुकूलता सहित अल्ट्राफेन के प्रभाव की जाँच करें।
- विसंक्रामक का न्यूनतम एवं प्रभावी सांद्रता निर्धारित करना।
- मानक के रूप में क्लोरिन डाइऑक्साइड और डेकॉल सम्मिलित करा लें।

(कार्रवाई : डॉ मेरी जोसेफा, वैज्ञानिक डी, रो.वि. अनुभाग, केंरेअप्रसं, मैसूरु)

प्रौद्योगिकी स्थानांतरण परियोजनाएँ

1. **दक्षिण भारत में जी 4 शहतूत उपजाति का लोकप्रियकरण।**

समिति ने डॉ बी.टी. श्रीनिवास, वैज्ञानिक डी, व प अ. द्वारा प्रस्तुत इस प्रौद्योगिकी स्थानांतरण परियोजना को शहतूत उपजाति प्राधिकरण कार्यक्रम (दि. 25 अगस्त 2017 को जी 4 के दक्षिण क्षेत्र में वाणिज्यिक उत्पाद के लिए प्राधिकृत किया गया ।) के शेष कार्य के रूप में चर्चा की। प्रस्ताव का उद्देश्य कि केंरेबो / रे.उ.वि. के समन्वयन में पर्याप्त जी 4 बीज बागान संस्थापित करना और दक्षिण राज्यों में जी 4 उपजाति को लोकप्रिय बनाना, जिसके लिए समिति ने अनुमोदन दिया और तेजी से यह काम पूरा करने हेतु सराहना की।

(कार्रवाई : डॉ बी.टी. श्रीनिवास, वैज्ञानिक डी, क्षेप्रअ, केंरेअप्रसं, मैसूरु)

2. **रेशमकीट ऊजीमक्खी एक्सोरिस्टा, बोम्बिसिस के विरुद्ध फेरोमोन ट्रैप का प्रदर्शन एवं लोकप्रियकरण (एनबीएआईआर, बेंगलूरु)**

समिति ने शहतूत रेशम उत्पादन में ऊजी समस्या के स्थायी प्रबंधन हेतु विकसित प्रौद्योगिकी के व्यापक मूल्यांकन हेतु की जा रही परियोजना के परिणाम के आधार पर श्री .जे.बी. नरेन्द्र कुमार, वैज्ञानिक डी, प.अ. द्वारा प्रस्तुत परियोजना की चर्चा की। निम्नलिखित सुझाव देते हुए परियोजना के लिए अनुमोदन दिया।

- मूल्यांकन हेतु कार्य प्रणाली में फसल / कीटपालनगृह की संख्या, ट्रैप का स्थान, ट्रैप का आकार, रंग, कितनी ऊंचाई पर ट्रैप रखना है आदि प्राचलों का उल्लेख करना है।

- आम जैसे अन्य बागबानी फसलों में उपयोग किए जाने वाले समान ट्रैपों की समतुल्य लागत बनाए रखनी चाहिए।

- स्पेन्ट ऊजीमक्खियों का निरीक्षण करके अवलोकन दर्ज करना और ट्रैप किए गए ऊजी मक्खियों को नर और मादा में वर्गीकृत किया जाना है।
- उत्पाद का वाणिज्यीकरण और लागत – लाभ अनुपात को भी उद्देश्य में सम्मिलित करें।

(कार्रवाई श्री जे.बी. नरेन्द्र कुमार, वैज्ञानिक डी, केंरेअप्रसं, मैसूरु)

3. **दक्षिण राज्यों में ग्रीष्म ऋतु में कृषक स्तर पर नए द्विप्रज संकर टीटी 21 x टीटी 56 का मूल्यांकन।**

उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में उच्च तापमान सहनशील हृष्टपुष्ट रेशमकीट द्विप्रज संकरों को डीएनए चिह्नकों के सहारे विकसित करने हेतु हाल में समाप्त परियोजना के परिणाम के आधार पर डॉ एस. मंथिरामूर्ति, वैज्ञानिक डी, प.अ. द्वारा प्रस्तुत प्रौद्योगिकी स्थानांतरण परियोजना पर समिति ने चर्चा की। समिति ने परियोजना के लिए अनुमोदन दिया और निम्नलिखित सुझाव दिए गए।

- पत्ती कोसा अनुपात परिकलित करने हेतु प्रत्येक फसल के दौरान रोग प्रकोप एवं पर्यावरण स्थितियों पर आँकड़ा दर्ज करें।

(कार्रवाई : डॉ एस. मंथिरा मूर्ति, वैज्ञानिक डी, द्विप्रप्र, केंरेअप्रसं, मैसूरु)

चालू परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा

समिति ने निम्नलिखित चालू परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की और अन्वेषक को सुझाव दिया कि लक्ष्य के अनुरूप परियोजना जारी रखें।

1. **पीआईबी 3457 : मूल विगलन और मूल गाँठ रोग को विशेष महत्व देते हुए दक्षिण भारत के रेशम उत्पादन क्षेत्रों के लिए उपयुक्त रोग प्रतिरोधी उत्पादक शहतूत जीनप्ररूप विकसित करना।**

समितिने अंतिम रिपोर्ट प्रस्तुत करते समय सांख्यिकी तौर पर आँकड़ा विश्लेषण करने को कहा।

(कार्रवाई : डॉ एस. गाँधी दास, वैज्ञानिक डी, श.प्र., केंरेअप्रसं, मैसूरु)

2. ए.आर.पी. 3519 : दक्षिण भारतीय राज्यों के बीज एवं वाणिज्य फसल पालन का रेशमकीट रोग अनुवीक्षण।

समिति ने टिप्पणी की कि प्रस्तुतीकरण अच्छा नहीं है और सुझाव दिया कि वर्षवार समेकित आँकड़ा प्रस्तुत करें और निष्कर्ष सहित आँकड़े का ग्राफिक चित्रण प्रस्तुत करें।

(कार्रवाई : डॉ मेरी जोसेफा, वैज्ञानिक डी, रे.रो.वि., केंरेअप्रसं, मैसूरु)

3. पीपीए 3549 : पौधारोपण ज्यामिति को विशेष महत्व देते हुए दीर्घकालीन शहतूत पत्ती उत्पादन हेतु आशोधित अंतराल का मूल्यांकन

समिति ने इसका अवलोकन करके सांख्यिकी तौर पर आँकड़ा विश्लेषण करने को कहा।

(कार्रवाई : श्री वी.के. यादव, वैज्ञानिक सी, सस्य विज्ञान, केंरेअप्रसं, मैसूरु)

4. **पी.आर.ई. 3546 : शहतूत पत्ती रॉलर, डयफेनिया पल्वेरुन्टालिस (लेपिडोपेरा, पइरालिडे) के सेक्स फेरोमोन की पहचान, लक्षणन, विश्लेषण और क्षेत्र मूल्यांकन (एनबीएआईआर, बेंगलूरु)**

समिति ने क्षेत्र मूल्यांकन आँकड़े का अवलोकन करके अंतिम रिपोर्ट प्रस्तुत करते समय छायाचित्र समेत आँकड़ा प्रस्तुत करने को कहा।

(कार्रवाई : श्री. जे.वी. नरेन्द्र कुमार, वैज्ञानिक डी, पी.प्र.प्र., केंरेअप्रसं, मैसूरु)

5. **पी.आई.जी. 3592 : आर्द्रता एवं क्षारीयता प्रतिबल को विशेष महत्व देते हुए शहतूत में जीवेतर प्रतिबल सहनशीलता हेतु सूचकांक की पहचान।**

समिति ने प्रस्तुतीकरण का अवलोकन किया और उद्देश्य के अनुसार प्रस्तावित लक्ष्य प्राप्त करने हेतु प्रयोग संचालित करने को कहा।

(कार्रवाई : डॉ टी. गायत्री, वैज्ञानिक बी, श.प्र.प्र., केंरेअप्रसं, मैसूरु)

6. **पी.आर.पी. 3591 : मूल गाँठ सूत्र कृमि रोग हेतु शहतूत जननद्रव्य में रोग प्रतिरोध शक्ति की पहचान।**

समिति ने व्यवस्थित प्रस्तुतीकरण की सराहना की और लक्ष्य प्राप्त करने हेतु अच्छा काम करने को कहा।

(कार्रवाई : डॉ जी.एस. अरुण कुमार, वैज्ञानिक बी, आ.जी.वि., केंरेअप्रसं, मैसूरु)

7. **ए.आई.टी. 3593 : रेशम गुणवत्ता हेतु आण्विकी चिह्नकों की पहचान हेतु रेशमकीट का ट्रान्स्क्रिपॉम विश्लेषण।**

समिति ने प्रस्तुतीकरण का अवलोकन करके सलाह दी है कि लक्ष्य प्राप्त करने हेतु ट्रान्स्क्रिपॉम आँकड़ा तैयार करने तथा विश्लेषण करने हेतु बाहरी एजेन्सी के साथ अनुवर्ती कार्रवाई करने को कहा।

(कार्रवाई : डॉ एल. कुसुमा, वैज्ञानिक बी, आ.जी.वि. II, केंरेअप्रसं, मैसूरु)

8. **एम.ओ.ई. 3595 : रेशम उत्पादन के कोसोत्तर क्षेत्र में उद्यम हेतु व्यापार मॉडल विकसित करना**

समिति ने प्रस्तुतीकरण की सराहना की और सुझाव दिया कि लाभप्रद मॉडल की तुलनात्मक चार्ट प्रस्तुत करें।

(कार्रवाई : सुश्री जोयसी राणी, वैज्ञानिक बी, रे.वि.अ.प्र., केंरेअप्रसं, मैसूरु)

9. **ए.आई.पी. 3568 : शहतूत रेशमकीट बोम्बिक्स मोरि एल (एन.आई.ए.एन.पी के सहयोग से) के स्पेन्ट प्यूपे से मूल्यवर्द्धित उत्पादों को विकसित करना।**

समिति ने प्रस्तुतीकरण तथा परियोजना की प्रगति का अवलोकन किया और तेल और प्रोटीन के अभिलक्षणन हेतु आई ओ ई, मैसूरु विश्वविद्यालय में उपलब्ध अवसंरचना सुविधाओं का उपयोग करने का सुझाव दिया।

(कार्रवाई : डॉ वाई. तिरुपतय्या, वैज्ञानिक बी, रे.श.वि., केंरेअप्रसं, मैसूरु)

अन्य चालू परियोजनाएँ

रेशमकीट प्रजनन पर चालू अनुसंधान परियोजनाओं के संबंध में समिति ने अन्वेषकों को सलाह दी है कि अब तक की अनुसंधान प्रगति रिपोर्ट समालोचनात्मक समीक्षा और अगली अनुवर्ती कार्रवाई हेतु अ.स.स. के रेशमकीट प्रजनन विशेषज्ञ व अ.स.स. सदस्य डॉ चन्द्रशेखरय्या को प्रस्तुत करे समिति ने अन्वेषकों को शेष चालू परियोजनाओं की प्रगति का अवलोकन करके प्रस्तावित उद्देश्य एवं लक्ष्य पर ध्यान केन्दिर्त करने की सलाह दी।

अ.स.स. सदस्यों व अध्यक्ष की अभ्युक्तियाँ

- निदेशक, केंतअप्रसं, बेंगलूरु ने सुझाव दिया कि रेशमकीट नस्लों / संकरों में तंतु लंबाई सुधारने संबंधी परियोजना ले ताकि द्विप्रज संकरों में रेशम गुणवत्ता सुधारने हेतु आकार विचलन पर ध्यान दें। उन्होंने संस्थान द्वारा नए विकसित संकरों नस्लों पर सूचना भेज देने हेतु भी अनुरोध किया।

- अ.स.स. अध्यक्ष ने अन्वेषकों के प्रस्तुतीकरण की सराहना की और आपस में विचार विनिमय करने का सुझाव दिया ताकि भविष्य में बहु विषयी अनुसंधान परियोजनाएँ ली जा सके।

- अ.स.स. सदस्यों ने सुझाया कि अन्वेषक आँकड़े का सांख्यिकी विश्लेषण करके परियोजना सुधारें।

- समिति ने नए अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी स्थानांतरण परियोजनाओं के प्रधान अन्वेषकों को सलाह दी है कि समिति के सुझावों / आशोधनों की दृष्टि में प्रपत्र के अनुसार पूरी परियोजनाएँ तैयार करें ताकि केंरेबो और अ.स.स. द्वारा आगे की कार्रवाई की जा सके।

- अ.स.स. ने देखा कि वैज्ञानिक गण अनुसंधान कार्यों पर शोध पत्र प्रकाशित करने हेतु कम प्रयास कर रहे हैं। अनुसंधान परिणामों का उपयोग करने हेतु एकस्व फाइल करना तथा प्रौद्योगिकियों / उत्पादों का वाणिज्यीकरण करना भी महत्वपूर्ण है।

अध्यक्ष को धन्यवाद देते हुए बैठक समाप्त हुई।

अध्यक्ष